रविवार, 05 मार्च, 2023

वैक्सीन की शुरुआत चरक व सुश्रुत जैसे विशारदों ने की : डॉ. मनसुख मांडविया

"वैक्सीन का इतिहास बहुत लंबा है। दुनिया ने 17वीं शताब्दी में वैक्सीन की खोज की, जबकि भारत में लगभग 2500 वर्ष पहले ही शुरुआत हो चुकी थी। हमारे पास चरक और सुश्रुत जैसी विरासत है।" ये उद्‌गार माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार

कल्याण एवं रसायन व उर्वरक मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने 'भारत की वैक्सीन की विकास-गाथा : गो-चेचक से वैक्सीन मैत्री तक' पुस्तक के लोकार्पण के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी बदल चुकी है। पहले वैक्सीन पर शोध करना, आविष्कार करना और समय पर उपलब्ध कराना बहुत ही जटिल कार्य होते थे। भारत में ब्रेन पावर और मैन पावर की कमी नहीं है। बस हमें पहचानने की आवश्यकता है। एक समय ऐसा था कि भारत दुनिया के विकसित देशों की ओर वैक्सीन के लिए नजर गड़ाए रहता था, आज भारत में बनी वैक्सीन पर दुनिया आश्रित हो रही है।

यदि कोरोनाकाल के समय भारत में वैक्सीन न बनी होती तो क्या आम जनता को यह समय पर मिलती और यदि यह नहीं होती तो कितनी जानें गई होतीं। जब पूरी दुनिया घरों में कैद थी तब प्रधानमंत्री ने वैज्ञानिक समुदाय से बात की और पूछा कि इससे निजात पाने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए। उन्होंने जवाब दिया कि यह कोविड 19 वाइरस है, यह केवल वैक्सीन से ही रोका जा सकता है। पुस्तक के संदर्भ में उन्होंने कहा कि यह शोध आधारित दस्तावेज है और इसमें वैक्सीन के कालानुक्रम को विधिवत समाहित किया गया है। पुस्तक में इसके बारे में सूचना के साथ-साथ इसके शोध और प्रबंधन के बारे में विस्तृत वर्णन दिया गया है। यह पुस्तक हमारी सफलता की कहानी कहती है। हम ऐसे ही साहित्य का सृजन करते रहें ताकि दुनिया हमारी ओर आशा की दृष्टि से देखे।

इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि विश्व पुस्तक मेले में हजारों की संख्या में देश-विदेश से हजारों-लाखों पाठक, प्रकाशक, पुस्तक-प्रेमी आते हैं। वे अपनी पसंदीदा पुस्तकों का क्रय करते हैं। कुछ प्रकाशन गृह आपस में अनुबंध भी करते हैं। साहित्य, संस्कृति, कला और समाज दर्शन के लिए विभिन्न मंचों पर संवाद, संगोष्ठियाँ, अकादमिक चर्चा और पुस्तक विमोचन से जुड़े कार्यक्रम होते हैं, ऐसे ही कार्यक्रम के तहत यह पुस्तक विमोचित की जा रही है।

लेखक डॉ. सज्जन सिंह यादव ने कहा कि भारत में टीकाकरण अभियान कैसे चलाया गया और हमने कैसे दो करोड़ से ऊपर वैक्सीन लगाने का लक्ष्य पूरा कर लिया है। यह पुस्तक में वर्णित है। यह पुस्तक उस समय लिखी जा रही थी जब हम

लॉकडाउन के समय घरों में कैद थे। उस समय मैंने शोध शुरू किया। हालाँकि इससे जुड़े साहित्य में हजारों कहानियाँ हैं जिसमें वैज्ञानिकों और आम जनमानस के अंतर्मन के अंदर झाँका गया है, लेकिन इसके पीछे के नेतृत्व पर नहीं लिखा गया। इसमें वैक्सीन डिप्लोमैसी, वैक्सीन इक्विटी जैसे विषयों पर चर्चा की गई है। इस अवसर पर श्री राजेश भूषण, सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने कहा कि 12 प्रकार के रोग वैक्सीन से रोके जाते हैं। यह पुस्तक वैक्सीन की विकास यात्रा को बताती है। यह वैक्सीन का ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो दुनिया को भारत सफलता की कहानी कहता है। इस अवसर पर श्री लोक रंजन, सचिव उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय उपस्थित रहे। न्यास के निदेशक श्री युवराज मलिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

माननीय मंत्री जी ने न्यास निदेशक के साथ मेले का भ्रमण किया और थीम पवेलियन की विशेषताओं की जानकारी ली।

हलचल

ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स ने 'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर सामूहिक स्वत्वाधिकर प्रबंधन के आर्थिक योगदान' पर एक सत्र आयोजित किया। सत्र का संचालन श्री प्रणव गुप्ता ने किया और वक्ता थे श्री केविन फिट्जगेराल्ड, श्री अंकित साहनी और डॉ. अनंत। इंडियन रिप्रोग्राफिक राइट्स ऑर्गनाइजेशन, फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स की एक पहल है, जो विशेष रूप से भारत में 'साहित्यिक कृतियों के रिप्रोग्राफिक राइट्स' के कॉपीराइट आदान-प्रदान को विनियमित करने की अनुमति है। केविन फिट्जगेराल्ड ने सामूहिक स्वत्वाधिकार प्रबंधन संगठन के बारे जानकारी देते हुए बताया कि कैसे यह लेखकों और रचनाकारों के आर्थिक अधिकारों के प्रबंधन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अंकित साहनी ने कानूनी, प्रक्रियात्मक, तकनीकी और सांस्कृतिक चुनौतियों पर टिप्पणी की। उन्होंने आगे ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनाने पर जोर दिया। डॉ. अनंत ने प्रकाशकों की कम भागीदारी पर चिंता व्यक्त की।

ऑस्ट्रियन कल्चरल फोरम, नई दिल्ली ने ऑस्ट्रियाई प्रोफेसर डॉ. मार्टिन गैंजल और डॉ. अनिल कुमार के साथ 'प्रसिद्ध मानवविज्ञानी क्रिस्टोफ फ्यूरर वॉन हेइमेंडोर्फ को श्रद्धांजलि' शीर्षक से एक विमर्श का आयोजन किया।

'आजाद हिंद फौज और सुभाष चंद्र बोस पर कविताएँ और गीत' पुस्तक का विमोचन प्रो. नागेश्वर राव (कुलपति, इग्नू), प्रो. कपिल कुमार (पूर्व निदेशक सेंटर फॉर फ्रीडम स्ट्रगल और सीनियर फेलो एनएमएमएल, दिल्ली) और श्रीकांत महापात्र (निदेशक, क्षेत्रीय सेवा प्रभाग और ईएमपीसी, इग्नू) की उपस्थिति में किया गया। पुस्तक का पहला खंड हिंदी में और दूसरा खंड उर्दू में लिखा गया है। साथ ही, दोनों संस्करणों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। ये पुस्तकें 1943 से 1947 तक की सौ कविताओं और गीतों का संग्रह है। ये कविताएँ आजाद हिंद फौज के उन जाने-अनजाने सैनिकों के बारे में हैं जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी और भारत की आजादी के लिए संघर्ष किया।

'भारतीय भाषाओं के सीधे इस्तेमाल' विषय पर चर्चा की शुरुआत प्रो. अवधेश कुमार मिश्रा ने करते हुए कहा कि अंग्रेजी पर बहुत अधिक निर्भरता ने देश के विकास को रोक दिया है। अब समय आ गया है कि हम यह महसूस करें कि हिंदी और अन्य स्थानीय भाषाओं में संचार प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का विषय होना चाहिए। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए इग्नू के कुलपति प्रोफेसर नागेश्वर राव ने उच्च शिक्षा संस्थानों में हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के दायरे के विस्तार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उनका कहना था कि यदि युवाओं को विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों को भारतीय भाषाओं में पढ़ाया जाए तो वे बेहतर प्रदर्शन करेंगे। जस्टिस श्री चौहान ने सरकारी कामकाज में हिंदी और अन्य देशी भाषाओं के इस्तेमाल पर जोर दिया। डॉ. रंजना अग्रवाल (निदेशक, सीएसआईआर) ने आधुनिक शिक्षा में 'वैदिक विज्ञान' और 'प्राचीन भारतीय विज्ञान' के महत्व और आवश्यकता के बारे में बात की। प्रो. संक्रांत शानूजी ने इस बात पर जोर देते हुए सत्र का समापन किया कि दुनियाभर के राष्ट्र प्रगति करते हैं क्योंकि वे अपनी मूल भाषा से ज्ञान पाते हैं।

श्री अरबिंदो आश्रम (दिल्ली शाखा) द्वारा इंटीग्रल एजुकेशन फ्रेमवर्क के साथ एनईपी-2020 के तुलनात्मक विश्लेषण पर एक सत्र आयोजित किया गया जिसमें प्रमिला बासन, जयंती रामचंद्रन (मिरांबिका फ्री प्रोग्रेस स्कूल, दिल्ली की प्रिंसिपल) और डॉ. कमला मेनन (मिरांबिका फ्री प्रोग्रेस स्कूल, दिल्ली में शिक्षक) वक्ता थीं। डॉ. कमला मेनन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए सत्र की शुरुआत की, जिसमें गहरे ज्ञान, कौशल, मूल्यों और स्वभाव को विकसित करने पर जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि पुराने विचारों को नवीनता लाकर वर्तमान समय में लागू करने का प्रयास किया जा रहा है। एनईपी-2020 और इंटीग्रल एजुकेशन के बीच अंतर और सीखने के वर्तमान और भविष्य पर उनके प्रभाव अनुभव साझा किए गए। यह शिक्षा नीति मुख्य रूप से बाहरी मूल्यांकन पर केंद्रित है, जबकि एकीकृत शिक्षा स्वयं के संकायों को विकसित करने के लिए आत्म-मूल्यांकन पर केंद्रित है। इस ढाँचे को सभी को समान शिक्षा प्रदान करने, महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता को बढ़ावा देने और छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है।

सुश्री सारिका धूपर द्वारा लिखित पुस्तक 'अभिसार' का विमोचन सुश्री रंजना अग्रवाल (सीएसआईआर की निदेशक), ज्योत्सना सिंह (कवि), नीर कंवल मणि (साहित्यकार और अनुवादक), पी.एल. सोनी (चार्टर्ड एकाउंटेंट) की उपस्थिति में संपन्न हुआ। लॉन्च किया गया। सत्र का संचालन शालिनी तुली ने किया। शुरुआत में लेखिका ने कवि बनने की अपनी यात्रा के बारे में अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि महामारी के दौरान उन्होंने ऐसी कविताएँ लिखीं जो सामयिक हैं, जैसे कि त्योहार/संस्कृति, प्रकृति, संबंध और कोविड 19 आदि।

मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत स्नातक स्तरीय पुस्तकों का लेखन कार्य तृतीय वर्ष में प्रवेश कर रहा है।' यह बात मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी के संचालक अशोक कड़ेल ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के लोकार्पण के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश देश का पहला राज्य है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर प्रमुखता से कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि विश्व पुस्तक मेले का आयोजन भारत में होना पाठकों और विद्यार्थियों के लिए गौरव की बात है, पुस्तकों के महाकुंभ में जहाँ एक ही स्थान पर विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें एक ही छत के नीचे उपलब्ध रहती हैं।

म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी की इन पुस्तकों का विमोचन किया गया—'शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य' लेखक ज्योति जुनगरे, वंदना श्रीवास्तव, रमेश शुक्ला, नमन सारस्वत, 'भाषा और संस्कृति' लेखक लक्ष्मीचंद, संगीता सक्सेना, अर्पणा बादल, 'भारतीय संगीत का इतिहास' लेखक प्रकाश कड़ोतिया, 'भारतीय ज्ञान परंपरा : बोध' लेखक उमेश कुमार सिंह, 'प्रायोगिक भूगोल' लेखक ललिता बक्सी, 'कंप्यूटर एप्लीकेशन एएससी डाट नेट और सी प्लस' लेखक एस. एस. श्रीवास्तव। इस अवसर पर यूजीसी के संयुक्त सचिव डॉ. राजेश वर्मा, वरिष्ठ लेखक ए.के. गांधी, अल्पना त्रिवेदी आदि उपस्थित थे। विश्व पुस्तक मेला में म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी का स्टॉल हॉल नंबर 4 (प्रथम तल) में स्टॉल नं. 6 पर है।

लाइव टू गिव ऑर्गेनाइजेशन द्वारा कला की दृष्टि से 'स्मारकों का इतिहास, कला और शिल्प' विषय पर कहानी वाचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कहानी वाचन सत्र का संचालन सुश्री मेघा शर्मा ने किया। कहानी वाचन कार्यक्रम में 60 से अधिक बच्चे उपस्थित थे। बच्चों ने 'चंपारण आंदोलन', 'लाल किले का इतिहास' जैसे विषयों पर कहानी वाचन किया।

पेंग्विन प्रकाशन द्वारा लेखक अनिल यादव के दूसरे यात्रा संस्मरण 'कीड़ाजड़ी' का लोकार्पण सुशांत झा के संचालन में डॉ. अपूर्वानंद (प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) और अनिल यादव ने किया। प्रो. अपूर्वानंद ने कहा कि साहित्य में श्रेणी करना अकादमिक मजबूरी है। लेखक अनिल यादव ने पुस्तक के शीर्षक का अर्थ बताया और कहा कि 'कीड़ाजड़ी' का व्यापार उत्तर-पूर्व के लोगों के लिए 'करेंसी' है। इस पुस्तक में पहाड़ी क्षेत्रों के स्थानीय लोगों के जीवन, परिश्रम, आनंद के साथ-साथ वहाँ के राजनीतिक परिदृश्य का वर्णन है।

विंसर पब्लिशिंग कंपनी द्वारा 'पुस्तक लोकार्पण एवं संवाद कार्यक्रम' आजोजित किया गया, जिसका विषय था 'गढ़वाली भाषा अर नरेंद्र सिंह नेगी'। कार्यक्रम में नरेंद्र सिंह नेगी की तीन पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। पुस्तकें थीं—'तुम दगड़ि यी गीत राला', 'तेरी खुद तेरू ख्याल' (गढ़वाली फिल्मी गीत), अब जबकि (कविता पोथी) गढ़वाली भाषा के प्रसार पर जे.एन.यू. के प्रोफेसर डॉ. साकेत बहुगुणा ने कहा कि गढ़वाली भाषा को एकजुट होकर बचाना है। हम अपने बच्चों को गढ़वाली भाषा जरूर सिखाएँ। यह हमारी आंचलिक भाषा है। दिल्ली में गढ़वाली, कुमाऊँनी की कक्षाएँ भी चलनी जरूरी हैं। उत्तराखंड में गढ़वाली-कुमाऊँनी की अकादमी भी बननी चाहिए। कार्यक्रम में बीना बेंजाल, संजय दरमोड़ा और दिगमोहन सिंह नेगी उपस्थित थे। गणेश खुगशाल ने संचालन किया। प्रकाशक थे कीर्ति नोमानी। कार्यक्रम में गढ़वाली भाषा में कविताएँ भी पढ़ी गईं।

संदेश

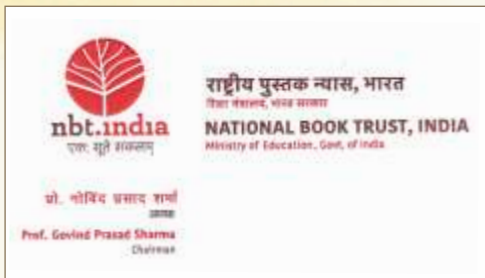

मुझे यह कहते हुए अपार खुशी हो रही है कि आज संपन्न होने वाला 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2023' बेहद सफल रहा। इस मेले में प्रत्येक दिन आए पुस्तक-प्रेमियों, विशेषकर युवाओं व बच्चों की अपार भीड़ ने पूरे विश्व को आश्वस्त कर दिया है कि सूचना क्रांति और नई तकनीकी की चमक-दमक के बीच मुद्रित पुस्तकें अभी भी लोगों की आवश्यकता और स्नेह का केंद्र बनी हुई हैं। पूरी दुनिया को इस विश्व पुस्तक मेले का स्पष्ट संदेश है कि पुस्तकों से निकला ज्ञान दुनिया को शांति, सद्भाव और बंधुत्व के सूत्र में बाँध सकता है। भारतीय मनीषा से निःसृत राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी) का ध्येय वाक्य 'एकः सूते सकलम्' भी यही संदेश देता है। यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि पुस्तक मेला का उद्घाटन हमारे माननीय शिक्षा राज्य मंत्री, श्री राजकुमार रंजन सिंह द्वारा किया गया और उन्होंने हमारे साथ अपना बहुमूल्य समय बिताया। मैं फ्रांस से आई साहित्य में नोबेल से अलंकृत सुश्री आनी ओरनौ और भारत में फ्रांस के राजदूत श्री इमैनुएल लैना के साथ प्रतिनिधियों के प्रति भी अनुग्रहीत हूँ जो मेले में सम्मिलित हुए और हमारे प्रयासों की सराहना की।

इस वर्ष हमें 'फ्रांस' को सम्मानित अतिथि देश के रूप में आमंत्रित करने पर अपार प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने देश के समकालीन लेखन एवं लेखकों का भारतीय पाठकों से परिचय कराया। विदेशी मंडप पर अनेकानेक साहित्यिक कार्यक्रम एवं विमर्शों के आयोजन हुए, मैं आश्वस्त हूँ कि भारत और फ्रांस के बीच यह सहयोग और सांस्कृतिक जुड़ाव काफी दूर तक जाएगा।

मैं दिल्ली मेट्रो का भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अनेक मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक मेले का टिकट उपलब्ध कराने की व्यवस्था की, जिसके कारण बड़ी संख्या में पुस्तक-प्रेमियों को पुस्तक मेला तक आने में काफी सहूलियत हुई। एक बार फिर मैं सभी सहभागियों, आई.टी.पी.ओ. और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के मेरे कर्मठ सहकर्मियों को इस पुस्तक मेले को ऐतिहासिक सफलता और सार्थकता देने के लिए धन्यवाद देता हूँ।

नई दिल्ली
05 मार्च, 2023

(प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा)

पुस्तक महाकुंभ के लिए बधाई

कुछ ही घंटों बाद 'नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले 2023' का समापन हो जाएगा। पुस्तक-प्रेमियों, प्रकाशकों और लेखकों के लिए यह सशक्त आश्वासन है कि मुद्रित पुस्तकें आज भी लोकप्रिय हैं और आने वाले दिनों में भी उनकी महत्ता बनी रहेगी। हर वर्ग, आयु के लोगों की इतनी विशाल संख्या पिछले आठ दिनों के दौरान प्रगति मैदान में आई। पुस्तकों के प्रति आपका यह अनुराग देश की समृद्ध साझा संस्कृति का सशक्त प्रमाण है। विगत कुछ वर्षों में हमारे प्रयासों ने न केवल हमारी पहुँच को विस्तार दिया है, बल्कि प्रकाशन उद्योग से जुड़े हमारे मित्रों की वृहत्तर भागीदारी को भी समर्थ बनाया है, साथ ही लेखक, विद्वान एवं जन सामान्य की भी इस बीच भागीदारी बढ़ी है। विश्व पुस्तक मेले के इतिहास में हम पहली बार प्रधानमंत्री युवा लेखक योजना और भारत@75 माला के अंतर्गत युवा लेखकों और देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले महानायकों के कुछ श्रेष्ठ लेखन को भी केंद्र में लाने में सफल रहे। थीम मंडप ने 'आजादी का अमृत महोत्सव' के विभिन्न पहलुओं—यथा साहित्य, स्वतंत्रता संघर्ष की यात्रा से रू-ब-रू कराती पुस्तकें और समाचार-पत्र, शहीदे-आजम भगत सिंह की डायरी के जरिए प्रकाश डाला। मंडप में अनेक लेखक, विद्वान, लोक कलाकारों आदि ने विभिन्न चर्चा एवं संवादों में भाग लिया। हमारे लिए यह संतोष की बात है कि पुस्तकप्रेमियों की नई पीढ़ी थीम मंडप में स्वतंत्रता संघर्ष से जुड़ी पुस्तकों, समाचार पत्रों और भगत सिंह की हस्तलिखित मूल डायरी के माध्यम से भारत की आजादी को जानने-समझने के लिए पूरे नौ दिन उमड़ती रही। इसके अलावा बहुप्रतीक्षित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए अलग मंडप स्थापित किया गया, जहाँ शिक्षा से जुड़े और शिक्षाविदों के कार्यक्रम आयोजित होते रहे। एक प्रदर्शनी भारतीय संविधान की विकास यात्रा को दर्शाते हुए तैयार की गई थी जो संविधान के प्रारूपण से लेकर संविधान निर्माण की कहानी बयाँ कर रही थी। अनेक व्यापारिक उपक्रम, यथा सीईओ स्पीक एवं प्रतिलिप्यधिकार मंच काफी सफल रहे जिसने प्रकाशकों एवं साहित्यिक प्रतिनिधियों के मध्य एक बेहद स्वस्थ प्रभाव की रचना की। पुस्तकों के अलावा इस मेले में हजारों स्थापित एवं उभरते हुए लेखकों ने विभिन्न संवादात्मक सत्रों में पुस्तकप्रेमियों से उत्साहपूर्वक संवाद किए। इन गतिविधियों यथा—चर्चा व विमर्शों ने पुस्तक मेले में एक बौद्धिक वातावरण बनाया।

इस पुस्तक मेले की सफलता में सभी प्रकाशकों, वितरकों, दर्शकों, आई.टी.पी.ओ, पुलिस व अन्य शासकीय विभाग तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के मेरे सहकर्मियों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। मैं इन सभी को बधाई तथा धन्यवाद देना चाहूँगा।

पठन अभिरुचि के इस अभियान का यह एक पड़ाव मात्र था, हमें साथ मिलकर इस दिशा में नॉलेज पार्टनर के रूप में राष्ट्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करना है।

नई दिल्ली
05 मार्च, 2023

(युवराज मलिक)
निदेशक

HEAD OFFICE Nehru Bhawan, 5 Institutional Area, Phase II, Vasant Kunj, New Delhi-110 070 | Phone: 91-11-26707700 | Fax: 91-11-26707846

गंगा जीवन देती है, मृत्यु के बाद अस्थियाँ गोद में समा लेती है : रजत शर्मा

ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग हाउस द्वारा आयोजित 'रिवर ऑफ मोक्ष पिलग्रिमेजेज अलोंग द गंगा' (लेखक : आचार्य महामंडलेश्वर कैलाशानंद गिरि महाराज) लोकार्पण समारोह पत्रकार रजत शर्मा, राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के इंद्रेश कुमार, सांसद निशिकांत दुबे, बिजनौर के सांसद मलूक नागर, प्रोफेसर परविंदर कौशल, दीपक सिंघल और विनोद अग्निहोत्री की उपस्थिति में संपन्न हुआ। श्री निशिकांत दुबे ने कहा कि इस पुस्तक का संबंध मुझसे ज्यादा है क्योंकि इसके पृष्ठ संख्या 77 से लेकर 122 तक वर्णन मेरे लोकसभा का है लेकिन मंदार पहाड़ का वर्णन नहीं है उसको जोड़ना चाहिए।

सांसद मलूक नागर ने कहा कि मैं ऐसी लोकसभा का सांसद हूं जिसकी पांचों विधानसभा गंगा के किनारे हैं। राष्ट्रीय मुस्लिम मंच के इंद्रेश कुमार ने गंगा का वर्णन करते हुए कहा कि अमृततत्त्व, अमृता का प्रतीक है। पुस्तकें हमेशा मानव कल्याण के लिए होती हैं। गुरु जी की यह पुस्तक भी मानव कल्याण के लिए ही है। रजत शर्मा ने सनातन धर्म को आगे बढ़ाने के लिए देव दत्त जी का अभिनंदन करते हुए कहा कि सभी संत एक प्लेटफॉर्म पर आ रहे हैं यह भारत देश के लिए सुखद बात है। यहां पर उपस्थित सभी लोग गंगा से जुड़े हैं और मै आपसे जुड़ा हूं तो हम सब माँ गंगा के आराधक ही हैं, लेकिन जो गंगा हमें जीवन देती है और हम उसी गंगा को प्रदूषित करते हैं। भाजपा नेता श्याम जाजू ने कहा कि इस धारा में कितने वीरों की राख बही है उसको पूरा देश जानता है फिर भी प्रदूषित करता है। गंगा हमारी आस्था का विषय अवश्य है और उसको बचाने का भी कार्य हमें ही करना होगा।

पुस्तक के लेखक आचार्य महामंडलेश्वर कैलाशानंद गिरि महाराज ने उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि गंगा हम सबकी मां है और उसको बचाने का कार्य हमारा ही हैं, इसलिए हम सनातनियों को अपनी मां को बचाना चाहिए, गंगा पहली ऐसी नदी है जो त्रिपद गामिनी है और तीन जगह दक्षिण पद गामिनी है। जिसमें गंगा के प्रति श्रद्धा होगी उसके मन में सरस्वती निवास करती हैं। इसलिए ज्ञान की याचना किसी से भी की जा सकती है। लेकिन धन की याचना पिता, गुरु से छोड़कर किसी से नहीं करना चाहिए। गंगा को देखने मात्र से मुक्ति मिल सकती है इसलिए इस जीवनदायिनी का संरक्षण जरूरी है।

बाल मंडप

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के विभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र ने 'कैसे सोचे-समझें और कार्य करें' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की वक्ता 'नंदिनी नायर' थीं। कार्यक्रम में 'एमिटी इंटरनेशनल स्कूल' के बच्चे शामिल थे। नंदिनी नायर ने कहा कि मैं एक कथाकार हूँ, सभी उम्र के बच्चों के लिए कहानियाँ लिखती हूँ और मेरे लिए कहानियों के तीन ही स्रोत हैं—हमारे आस-पास का वातावरण, इतिहास और खबर। सुश्री नंदिनी ने बच्चों को 'व्हाट शैल आई मेक' और 'वेयर इस अम्मा' कहानियाँ सुनाईं।

पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार द्वारा योग कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 'सी.एस.के.एम. पब्लिक स्कूल' के बच्चों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यशाला का संचालन स्वामी सत्यदेव जी द्वारा किया गया। कार्यशाला बच्चों और बड़ों, दोनों के लिए ही आयोजित की गई, इसमें बच्चों को योग के महत्व बताए गए और उनसे कुछ योग मुद्राएँ भी करवाई गईं।

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा 'कहानी वाचन' सत्र का आयोजन किया गया। सत्र की वक्ता, कहानीकार 'सुश्री श्रद्धा पांडे' थीं। कार्यक्रम में 'अंकुर संस्था' के बच्चे आए थे जिन्होंने कहानी वाचन के बाद मिलकर एक कहानी बनाई और मंच पर प्रस्तुत की। श्रद्धा पांडे ने कहा कि जो कहानी मैंने लिखी है और जो मैं आपको सुनाने जा रही हूँ, उसका कोई शीर्षक नहीं है। कहानी का शीर्षक बच्चों से पूछा गया। बच्चों ने उत्सुकता के साथ अलग-अलग शीर्षक बताए।

पराग इनिशिएटिव ऑफ टाटा ट्रस्ट्स की ओर से कमीशीबाई कथा, जापानी कला शैली में 'पपेट मेकिंग और कहानी वाचन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 'बाल भारती पब्लिक स्कूल' के बच्चे उपस्थित रहे। प्रिया कोरियन द्वारा लिखित और चित्रित की गई कहानी, 'लापता सुंदरी' का वाचन 'वसुंधरा बहुगुणा' द्वारा किया गया। कहानी वाचन के बाद बच्चों ने भी सुंदर-सुंदर पपेट बनाए। बच्चों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

दिल्ली स्टेट बुक सेलर्स एसो. की 'निर्देशिका' का लोकार्पण

दिल्ली स्टेट बुकसेलर्स के सदस्यों की निर्देशिका का लोकार्पण रा.पु. न्यास के निदेशक युवराज मलिक, कार्तिक राज कुशवाह, अध्यक्ष, दिल्ली स्टेट बुकसेलर्स एसो., मनीष सभरवाल, कौशल गोयल, चंदर मणि गोसाईं और शुभम जैन की उपस्थिति में किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्री गुरुगोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कामर्स पीतमपुरा, दिल्ली के युवा छात्रों ने भांगड़ा नृत्य प्रस्तुत कर दर्शक दीर्घा का भरपूर मनोरंजन किया। गायक पंथ प्रीत सिंह के 'पट्टाने जोरते मुंडे पगड़ा पांदे' पंजाबी गीत पर भांगड़ा नृत्य प्रस्तुत किया हरप्रीत सिंह, मनजोत सिंह, दमनजोत सिंह, गुनराज सिंह, रमनदीप सिंह, गुरजोत सिंह, गुरुप्रीत सिंह, किरतार्थ सिंह ने। ढोल पर थे अमित बैद, अलगोजे पर थे अमनजोत सिंह। कोच थे—गुरचरन सिंह और नरेंद्रपाल सिंह। अगली प्रस्तुति में 'अनप्लग्ड बैंड' के कलाकारों ने गीत प्रस्तुत किया। 'गुलाबी आंखें जो तेरी देखी, शराबी ये दिल हो गया' गीत दर्शकों द्वारा बहुत पसंद किया गया। बैंड के कलाकार थे—वैभव खरे, शोभित और अमन।

साहित्यिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आयोजित प्राइम टाइम चर्चा में 'बाहुबली' जैसा उपन्यास लिखने वाले लेखक आनंद नीलकंठन ने अपनी लेखन यात्रा के अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा यह निर्भर नहीं करता कि आप क्या बनना चाहते हैं, बल्कि यह निर्भर करता है कि आपके माता-पिता क्या बनते हुए देखना चाहते हैं। मैंने इंजीनियरिंग करने के बाद एक कंपनी में नौकरी शुरू की जो दरवाजे-दरवाजे सामान पहुँचाती थी। बाद में मैंने इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन में नौकरी की। अंततः मैंने कार्टून बनाना आरंभ कर दिया। कुछ समय बाद मैंने मलयालम में छोटी-छोटी कहानियाँ लिखीं, फिर अंग्रेजी में लिखा। मेरा मानना है कि आप वो लिखें जिसे आपका दिल करता है, न कि चलन के अनुसार लिखना जारी रखें। उन्होंने कहा कि उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम पौराणिक पात्रों के बारे में मान्यताएँ अलग-अलग हैं, इसलिए हमें इन पात्रों पर पुस्तक लिखते समय सावधानी बरतने की जरूरत है।

हार्पर कॉलिंस द्वारा आयोजित पुस्तक "बैड मन ऑफ बालीवुड" के विमोचन कार्यक्रम में बालाजी विट्ठल ने अपनी कहानियों से जुड़ी घटनाओं और उनसे जुड़ी मुलाकातों का जिक्र करते हुए बताया कि ये कलाकार परदे पर जितने ही बुरे दिखते हैं, परदे के पीछे उतने ही नेक लोग होते हैं, इसकी पुष्टि उन्होंने रंजीत, प्रेम चोपड़ा, डैनी और के. के. मेनन से हुई उनकी मुलाकात से की। उन्होंने कहा कि आठ साल लग गए इस किताब में और इन आठ सालों में मैं कहीं-न-कहीं इन खलनायकों को जस्टिफाई करने लगा था। यह पुस्तक फिल्मी दुनिया की कई सुनी-अनसुनी कहानियों पर मुख्यतः प्रचलित खलनायकों पर आधारित है।

वाणी प्रकाशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माननीय डी.पी. यादव (समाजसेवी, राजनीतिज्ञ, मंत्री) द्वारा लिखित पुस्तक 'वक्त साक्षी है' (काव्य संग्रह) का विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि यह काव्य संग्रह एक तरह की विलक्षण आत्मकथा है। श्री सखाराम यादव (सेवानिवृत्त न्यायाधीश) ने कहा कि डी.पी. यादव को लोग एक राजनीतिज्ञ से ज्यादा इनकी रचनाओं के माध्यम से याद रखेंगे। लेखकीय वक्तव्य देते हुए श्री यादव ने कहा कि कविता मन की रौनक के साथ पीड़ा भी है। उन्होंने जनसेवा और संस्कार पर अपने विचारों को श्रोताओं के समक्ष रखा। अरुण माहेश्वरी ने कहा कि पुस्तक मेला प्रकाशकों और लेखकों के लिए उत्साह लेकर आता है। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि आलोक यादव (कवि, शायर) के साथ अन्य वक्ताओं में श्री मदन यादव, श्री लक्ष्मी चन्द्र यादव, श्री दीपक द्विवेदी के साथ अदिति माहेश्वरी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जयकरण सिंह के साथ नवीन हसन ने किया।

हिंदी युग्म तथा रेडियो प्लेबैक इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में 'ऑडियो बुक्स की प्रासंगिकता' पर परिचर्चा आयोजित की गई। संजीव सारथी ने रेडियो प्लेबैक इंडिया की शुरुआत के बारे में कहा कि ऑडियो बुक्स दृष्टिहीन लोगों के लिए उपयोगी है। चांदनी माथुर ने कहा कि पुस्तक प्रकाशन के लिए अच्छा कंटेंट जरूरी है। पंकज सुबीर ने कहा कि ऑडियो बुक्स 'हमारी दादी-नानी का सुधरा हुआ रूप है।' इस दौरान प्रज्ञा मिश्र की आवाज में अनुपम चितकारा की कविता का जीवंत ऑडियो रूप श्रोताओं को सुनाया गया। अरुण कुमार ने कहा कि ऑडियो बुक्स बहुत बड़ा उभरता हुआ बाजार है। पात्रों की अलग-अलग आवाज की आवश्यकता के लिए ये वॉइस ओवर आर्टिस्टों के लिए रोजगार का अवसर देगा। दीपिका भाटिया ने कहा कि ऑडियो बुक्स, पुस्तकों की पूरक हैं, ये वर्किंग वूमेंस की समय की कमी को पूरा करती हैं। वहीं लेखक रणविजय ने कहा कि एक भाषा में लिखी रचना को अलग-अलग भाषाओं में सुना जा सकेगा। संचालन मनुज मेहता ने किया।

वाणी प्रकाशन समूह द्वारा डॉ. कुमार विश्वास की पुस्तक 'कोई दीवाना कहता है' के नए संस्करण का विमोचन अदिति माहेश्वरी और अरुण माहेश्वरी की उपस्थिति में किया गया। कुमार विश्वास ने बताया कि इस संस्करण में अकादमिक दुनिया में मुख्यधारा से अलग लोकप्रिय कवि भी मानक है। उन्होंने पुस्तक की कुछ पंक्तियों के अलावा अपना चर्चित गीत 'कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है' गाकर सुनाया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा अरुण कुमार भगत की पुस्तक 'पत्रकारिता : सर्जनात्मक लेखन और रचना-प्रक्रिया' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे न्यास के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि इस तकनीक के

युग में पत्रकारिता का आयाम विस्तृत हो गया है। यह काम जितना आसान हुआ है, उतना ही सावधानी बरतने की भी आवश्यकता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अवनिजेश अवस्थी ने कहा कि यह पुस्तक पत्रकारिता से संबद्ध पाठकों के साथ-साथ आम पाठकों के लिए भी बहुत उपयोगी है, इसका कारण यह है कि 'पत्रकारों को क्या करना चाहिए और वे ऐसा कर रहे हैं या नहीं' की पड़ताल कर सकें। इस पुस्तक में आलेख, फीचर, रेखाचित्र, समीक्षा, संस्मरण, व्यंग्य आदि समेत 11 विधाएँ समाहित हैं। डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने इसे पत्रकारिता का सृजनात्मक पक्ष उजागर करने वाली पुस्तक बताया। श्री जोशी ने कहा कि 'सूचना आधिक्य' के तले आज का आम पाठक दबता जा रहा है और इसी कारण पत्रकारिता में सृजनात्मकता को बढ़ावा देना एक आवश्यक कार्य हो गया है। मुख्य अतिथि श्री बी.के. कुठियाला ने कहा कि पत्रकार केवल लिखते हैं, जबकि उन्हें पढ़ना भी चाहिए। यह पुस्तक हमारी बनी-बनाई धारणा को बदलने का काम भी करती है।

ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'आजादी का अमृत महोत्सव और गुमसुम आजादी के नायक' पर एक संगोष्ठी हुई जिसमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने आजादी के गुमनाम नायकों का जिक्र किया तथा इतिहासकारों की दृष्टि और दिशा को भिन्न-भिन्न बताया। एक अंग्रेज इतिहासकार जेम्स को रेखांकित करते हुए उसकी पुस्तक 'ब्रिटिश रूल ऑफ इंडिया' के माध्यम से अध्यक्ष महोदय ने कहा कि जेम्स कभी भारत नहीं आया, लेकिन वो भारतीय संस्कृति, संस्कार, सभ्यता को भली-भाँति जानता था। इसी कूटनीति के तहत वो भारतीय संस्कृति की अवहेलना करता था और अंग्रेजों को चेताया कि कभी भी इनकी संस्कार, संस्कृति को कुछ नहीं बोलना, बल्कि इनको आपस में लड़ाओ और राज करो। अंग्रेज इसी मूलमंत्र को लेकर देश पर राज करते रहे। दीमक की भाँति हमारी संस्कृति को धीरे-धीरे खत्म करने लगे और अपनी मान्यताएँ हम पर थोपने लगे। न्यास के भारत @75 का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अनेक ऐसे स्वाधीनता संग्राम के हीरो को सामने लाया जिनको कोई जानता नहीं था, बस उनके जिले के कुछ गाँव देहात के लोग ही जानते थे जिनको न्यास ने छापकर आज वैश्विक स्तर पर पहुँचा दिया। संदीप कुमार तिवारी ने रानी गाइदिन्ल्यू को याद किया। राकेश शर्मा ने अमेठी के मंशाराम और सीताराम पाण्डेय का जिक्र किया और गिरमिटिया मजदूरों के संबंध में बताया। इस अवसर पर अनेक पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। संचालन शिवशंकर अवस्थी ने किया।

दास्तान-ए-जंग-ए आजादी

एनसीपीयूएल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में प्रो. दानिश इकबाल के निर्देशन में सुश्री आरफा जबीन और अजरूद्दीन अजहर ने आजादी की लड़ाई की कहानी सुनाई। इस कार्यक्रम में संगीत दिया– सादत इसर और सैयद इनसेरामुल हक ने।

उनकी नज़र में मेला

अत्यंत प्रशंसनीय प्रदर्शन! पुस्तक मेला एक महोत्सव है। हर प्रकार का चिंतन और प्रदर्शन यहाँ मिलता है। सुंदर आयोजन पुस्तकप्रेमी को प्रसन्नता देता है। इससे देश की प्रतिभा और उभरकर आएगी। इसमें संदेह नहीं। इस अतुलनीय प्रयास के लिए धन्यवाद। बहुत सारी शुभकामनाएँ!

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर
माननीय राज्यपाल, बिहार

बहुत ही सुचारु रूप से संयोजित किए गए इस मेले को पुस्तकप्रेमियों का प्रतिसाद देखकर और भी आनंद का अनुभव हुआ। एन.बी.टी. की पूरी टीम को शिक्षा मंत्रालय की ओर से आभार, अभिनंदन एवं शुभकामनाएँ।

अन्नपूर्णा देवी
माननीय शिक्षा राज्य मंत्री

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत का एक प्रतिष्ठित संस्थान है। विश्व पुस्तक मेला जैसे महत्वपूर्ण आयोजन के माध्यम से लेखकों, कवियों, साहित्यकारों एवं पाठकों को एक ही स्थान पर विश्व का समग्र साहित्य उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य के लिए मैं न्यास के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित मेरी दो पुस्तकों 'आजादी के महानायक : वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली' एवं 'हिमनद : मानव जीवन का आधार' के 'थीम मंच' पर विमोचन हेतु मैं समस्त अतिथियों का आभार व्यक्त करता हूँ।

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
पूर्व शिक्षा मंत्री

कई वर्षों के कोरोना संकट के बाद राहत मिली। पिछले वर्षों के मुकाबले बेहतर व्यवस्था की गई है। दर्शक एवं पाठक नयापन महसूस करेंगे।

के.सी. त्यागी
भूतपूर्व राज्यसभा सदस्य

कार्यक्रम की व्यवस्था उत्तम थी। चरैवेति!

प्रो. चंदन कुमार
हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

भव्य प्रदर्शनी!

क्रिस्टी मेका

बेहद रोचक, अद्भुत अनुभव!

बीट्रिग.आई. गौंज
मलावी उच्चायुक्त के अधिकारी

अद्भुत, अलौकिक, प्रेरणादायक, धन्यवाद!

योगेन्द्र सिंह
परमवीर चक्र विजेता

विश्व के वृहत्तम पुस्तक मेलों में एक। आश्चर्यजनक अनुभव!

ले. जनरल एम. के कातियान

बेहद समृद्ध करने वाला अनुभव! अद्भुत रूप से व्यवस्थित पुस्तक मेला। लोगों में भारी उत्साह देखकर खुश हूँ।

सज्जन सिंह यादव
एनबीटी लेखक एवं
अवर सचिव, वित्त मंत्रालय

बहुत बेहतर आयोजन। हर आयुवर्ग के लिए कुछ नया एवं रोचक।

चंचल कुमार
प्रबंध निदेशक,
एनएचआईडीसीएल

एन.बी.टी. का काम वास्तव में सराहनीय है।

डॉ. नीलम सक्सेना
सेंट स्टीफंस महाविद्यालय

विशेष आकर्षण

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

सभी पुस्तक प्रेमियों को आमंत्रित करता है

आएँ और विषयों की एक व्यापक शृंखला में से अपनी पसंदीदा पुस्तकों को चुनकर खरीदें।

हिंदी, अंग्रेजी तथा 55 प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, कविता, जीवनी, लोकोपयोगी विज्ञान, राजनीति, शासन, संस्कृति, भारतीय समाज, भारतीय राज्य, बाल पुस्तकों व नवसाक्षरों हेतु पुस्तकें।

एनबीटी स्टॉल

हॉल सं.: 2, स्टॉल सं.: 48–67; हॉल सं.: 3, स्टॉल सं.: 13–42;
हॉल सं.: 4 (प्रथम तल), स्टॉल सं.: 04–05;
हॉल सं.: 5, स्टॉल सं.: 34–63

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
प्रगति मैदान, नई दिल्ली

25 फरवरी
05 मार्च
2023

प्रातः 11:00 बजे से
रात्रि 8:00 बजे तक

आयोजक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सह–आयोजक

रविवार, दिनांक 05 मार्च, 2023 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम

समय	कार्यक्रम	आयोजक
	एनईपी पवेलियन : हॉल सं. 4 (प्रथम तल)	
03.00-4.00	पैनल चर्चा	आईआईएम, काशीपुर
	इंटरनेशनल इवेंट/युवा कॉर्नर : हॉल सं. 4	
12.00-01.00	स्पेन : इंटरनेशनल पवेलियन; स्पेनिश भाषा और संस्कृति पर कार्यशाला	रा.पु. न्यास
	थीम पवेलियन : हॉल सं. 5	
02:30-04:30	प्राइम टाइम चर्चा	रा.पु. न्यास
04:30-06:00	युवा स्वतंत्रता सेनानी 'बाजे राउत' पर संगीतमय प्रस्तुति	रा.पु. न्यास
	सेमिनार हॉल : हॉल सं. 4	
11.30-01.00	'किताबें जरा हटके' पर चर्चा	फ्लाईड्रीम्स पब्लिकेशंस
02.00-03.50	'वनमाली शृंखला की पुस्तक का विमोचन'	एआईएसईसीटी पब्लिकेशन
04.00-05.30	'मंकी-व्हाट्'स लेफ्ट व्हाट्'स राइट' पर चर्चा	पेपर टाउंस
06.00-07.30	समापन	रा.पु. न्यास
	बाल मंडप : हॉल सं. 3	
11.00-11.45	कहानी वाचन सत्र; *वक्ता* : सुश्री सुधा पुरी, कहानीवाचक	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
12.00-12.45	मैपोलॉजी खेल; डॉ. पियालीधर	हाशी एम्पॉवरिंग स्माइल्स
01.00-01.45	गीत, नाटक और प्रश्नोत्तरी : 'अमृत महोत्सव की शान, प्रांत-प्रांत के पकवान'; कहानीकार : सुश्री गिरिजा रानी अस्थाना, सुश्री कुसुमलता सिंह	बचपन सोसाइटी फॉर चिल्ड्रेन'स लिटरेचर एंड कल्चर
02.00-02.45	बच्चों के साथ रीड एलाउड कार्यक्रम या रीड एथोन; *संचालन* : सुश्री प्राची ग्रोवर	दा कम्युनिटी लाइब्रेरी, अ फ्री लाइब्रेरी ऑर्गेनाईजेशन
03.00-03.45	खगोलशास्त्र पर एक सत्र; *संचालन* : प्रेरणा चंद्रा	नेहरू प्लैटिनम
04.00-04.45	बाल साहित्यकारों से परिचर्चा; *संचालन* : कंचन वांचू शर्मा	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
	ऑथर्स कॉर्नर : हॉल सं. 5	
11.30-12.30	'डिजिटलीकरण, वित्त नियंत्रण और नियोजन' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : रक्तीम सिंह, जगमोहन सिंह, राकेश शर्मा	गुल्ली बाबा पब्लिशिंग हाउस
12.35-01.25	'एंड द वर्ल्ड बियोंड' पुस्तक विमोचन व चर्चा; *लेखक* : युसरा खान	ऑरेंज बुक पब्लिकेशन
01.30-02.30	'मेंकिंग इंडिया अ नेशन ऑफ रीडर्स एंड टेक्नोलॉजी लीडर्स' पर चर्चा; *वक्ता* : रंजन दत्ता (सेवानिवृत्त आईएएस)	अजय विजन एजुकेशन प्रा.लि.
03.00-04.00	'रीडिफाइन इंपॉसिबल, राइटिंग एंड मार्केटिंग मेमोरेबल चिल्ड्रेन'स लिटरेचर' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : वसुधा विक्रम मदान, भूपेन्द्र सूरी, निहित मोहन, हरविन्दर सिंह, तनु कृष्णन, प्रगति सुरेखा	माई सीक्रेट बुकशेल्फ
04.30-05.30	चिंतन एवं लेखन की सृजनात्मक कला से बच्चों और लेखकों का परिचय	रीतिका सुभाष
	लेखक मंच : हॉल सं. 2	
11.30-12.30	पुस्तक 'हिंदी भाषा के विकास में लोक भाषाओं का योगदान'; *वक्ता* : हरिनारायण सिंह हरि, संजीव मुकेश, राहुल शिवाय; *संचालन* : शारदा सुमन	कविता कोश
01.00-02.00	लेखक से मुलाकात पीयूष कुमार; *वक्ता* : हेमंत शर्मा,	प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
02.30-03.30	'शहीद कांशीराम मारुली' पुस्तक विमोचन; *वक्ता* : बलवीर माधोपुरी, सीताराम बंसल	रा.पु. न्यास
04.00-05.00	पुस्तक पत्रिका 'चेतना का देश-राग साहित्य वार्षिकी' का विमोचन; *वक्ता* : राकेश विहारी, डॉ. संजीव, लीलाधर मंडलोई; *संचालन* : महेश्वरी	पुस्तकनामा
05.30-06.30	पुस्तक 'कैसे कहूँ', कविता संग्रह का लोकार्पण एवं चर्चा; *वक्ता* : श्री राम कृपाल यादव, सांसद, भाजपा	रश्मि शरण प्रभात किशोर शरण
07.00-08.00	लेखक से मुलाकात; *वक्ता* : डॉ. रश्मि	प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
	सांस्कृतिक कार्यक्रम (एंफीथियेटर)	
05:00-06:00	कथक नृत्य	कथक केंद्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
06.00-07.00	शास्त्रीय नृत्य	सतयुग दर्शन ट्रस्ट

पुस्तक मेला के बारे में सामान्य जानकारी

प्रगति मैदान : कहाँ पर क्या

मेले की अवधि	:	25 फरवरी -05 मार्च, 2023
समय	:	प्रातः 11 से सायं 8 बजे तक
स्थान	:	हॉल सं. 2 से 5

हॉल संख्या 5

थीम मंडप (आजादी का अमृत महोत्सव)
ऑथर्स कॉर्नर

हॉल संख्या 4

गेस्ट ऑफ ऑनर पवेलियन-फ्रांस
जी20 पवेलियन
बिजनेस लाउंज (व्यापार कक्ष)
इंटरनेशनल इवेंट्स कॉर्नर
सेमिनार हॉल

हॉल संख्या 4 (प्रथम तल)

नई शिक्षा नीति 2020 पवेलियन

हॉल संख्या 3

बाल मंडप

हॉल संख्या 3 (मेजानिन)

नई दिल्ली राइट्स टेबल

हॉल संख्या 2

लेखक मंच

पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं

सामान्य एवं व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी	:	हॉल सं. 5 और 4 (प्रथम तल)
हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएँ	:	हॉल सं. 2
बच्चों के लिए पुस्तकें	:	हॉल सं. 3

20 मेट्रो स्टेशन पर पुस्तक मेले के टिकट उपलब्ध

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला देखने आने वालों के लिए दिल्ली मेट्रो ने एक अच्छी सुविधा उपलब्ध कराई है, जिसके तहत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के 20 मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक मेले के लिए प्रवेश के टिकट उपलब्ध होंगे। वैसे ये टिकट प्रगति मैदान पर भी लिए जा सकते हैं। प्रगति मैदान के **गेट सं. 4** और **10** पर टिकट उपलब्ध हैं। इसके अलावा वेबसाइट : www.itpoonlineticket.in से भी ऑनलाइन टिकट ले सकते हैं। **टिकट दर :** वयस्क– **20** रुपये, बच्चे– **10** रुपये। छात्रों, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों के लिए प्रवेश निशुल्क है। जिन मेट्रो स्टेशनों पर टिकट उपलब्ध होंगे, वे इस प्रकार हैं–

1. रेड लाइन : रिठाला, दिलशाद गार्डन।

2. ब्लू लाइन : कीर्ति नगर, राजेन्द्र पैलेस, मंडी हाउस, सुप्रीम कोर्ट, वैशाली, नोएडा सेक्टर 18, नोएडा सेक्टर 52, नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी, इंद्रप्रस्थ।

3. येलो लाइन : हुड्डा सिटी सेंटर, हौज खास, विश्वविद्यालय, जीटीबी नगर, जहाँगीरपुरी, कश्मीरी गेट, राजीव चौक, आईएनए।

4. वॉयलेट लाइन : आईटीओ।

प्रवेश : गेट नं 4 (भैरों मार्ग) और गेट नं 10 (मेट्रो स्टेशन के पास)।
नोट : व्हील चेयर की सुविधा गेट नं 4 और 10 पर उपलब्ध है।

QR कोड स्कैन करके नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के टिकट ऑनलाइन खरीदे जा सकते हैं :

भाषावार प्रकाशक

• 1. हिंदी : 178 • 2. उर्दू : 19 • 3. संस्कृत : 3 • 4. मलयालम : 3 • 5. पंजाबी : 7 • 6. तमिल : 2
• 7. बांग्ला : 4 • 8. अंग्रेजी : 325 • 9. असमिया : 1 • 10. सिंधी : 2 • 11. गुजराती : 1 • 12. मैथिली : 2

हमसे यहाँ भी जुड़ें

https://www.twitter.com/nbt_india | https://www.facebook.com/nationalbooktrustindia | https://www.linkedin.com/company/nationalbooktrustindia
https://www.youtube.com/nbtindia | https://www.instagram.com/nbtindia | https://www.kooapp.com/profile/nbtindia
अधिक जानकारी के लिए **www.nbtindia.gov.in** पर जाएँ

मेला वार्ता के लिए विज्ञापन, समाचार, सूचना एवं सुझाव

इस ई-मेल पर भेजे जा सकते हैं– **melavartandwbf@gmail.com**
प्रकाशन हेतु सामग्री मेला वार्ता के **हॉल संख्या 4** के पास स्थित कार्यालय को भी दी जा सकती है।
विज्ञापन की दर इस प्रकार है : एक कॉलम, एक-चौथाई पेज–एक दिन के लिए रु. **3,000/-** ;
सभी अंकों के लिए मात्र रु. **25,000/-** विज्ञापन कम-से-कम एक दिन पहले भुगतान के साथ कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

संपादकीय सहयोग
विजय कुमार
कमलेश पाण्डेय
डॉ. अकरम हुसैन

उत्पादन
पवन दूबे

लेआउट एवं सज्जा
ऋतुराज शर्मा

टंकण
भानुप्रिया

संवाददाता
अर्चिता नयन
कंचन
कौशल

मेला वार्ता, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 30वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्री युवराज मलिक, *निदेशक*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित एवं मे. सालासर इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301 द्वारा मुद्रित।